टिप्पणी

27

परम्परागत माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम: तुलनात्मक अध्ययन

शुरुआती अध्याय में आपने परम्परागत माध्यम के विविध प्रकारों की जानकारी ली। क्या आपने कभी परम्परागत माध्यमों तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे टेलीविजन आदि के मध्य अंतर के विषय में सोचा है? दोनों के लाभ तथा हानियों को समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके पश्चात ही कोई व्यक्ति वांछित संचार हेतु उपयुक्त माध्यम का चयन कर सकेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि सभी परिस्थितियों में एक तरह का माध्यम संचार हेतु उपयुक्त नहीं होता।

परम्परागत हो या इलेक्ट्रॉनिक, हर माध्यम की अपनी क्षमताएँ तथा सीमितताएँ हैं। इन माध्यमों का औचित्यपूर्ण उपयोग करने हेतु इस्तेमाल से पहले उनके बारे में हर पहलू की जानकारी लेना आवश्यक है। इससे हमें अपना संदेश ज्यादा उपयुक्त तरीके से विकसित करने में मदद मिलेगी। अनेक बार संदेश अच्छा होता है परन्तु अनुपयुक्त माध्यम के चलते वह प्रभावी नहीं होता या उसका अर्थ गलत हो सकता है।

उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के उपरांत आप निम्नांकित करने में सक्षम हो सकेंगे:–

- परम्परागत माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लाभ तथा हानियों को सूचीबद्ध करना;
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा परम्परागत माध्यम की प्रक ति की चर्चा करना;

टिप्पणी

- परम्परागत माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सम्मिलित प्रभाव की व्याख्या।

27.1 परम्परागत माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडियाः लाभ तथा हानिः-

यह जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हर माध्यम के अपने गुण तथा अवगुण होते हैं। वह विभिन्न परिस्थितियों में उपयोगी होते हैं। यह तथ्य भी सत्य नहीं है कि मीडिया के कुछ रूप एक समय के बाद प्रभावी नहीं होते। उदाहरण के लिए जब भारत में रेडियो तथा टेलीविजन आए तो लगा कि समाचारपत्र तथा परम्परागत माध्यम जनसंचार में अपनी महत्ता खो देंगे। लेकिन सच्चाई यह है कि वे अभी भी मौजूद हैं तथा जनसंचार में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

समरूपी प्रारूप, विषयवस्तु तथा स्थानीय भाषा का उपयोग के चलने परम्परागत माध्यम संचार में स्पष्टता होती है। परम्परागत माध्यम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से नये विषयों को स्वीकार करने की लोचकता के चलते विशिष्ट होते हैं। उदाहरण के लिए समसामयिक घटनाओं पर जनोपयोगी टिप्पणियाँ 'तमाशा' तथा 'जात्रा' जैसे परम्परागत रूपों में स्वीकार कर ली जाती हैं।

अब हम परम्परागत माध्यमों तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के लाभ तथा हानियों को सूचीबद्ध करेंगे।

परम्परागत माध्यमों के लाभः—

- मानवीय संचार में सर्वाधिक उपयोगी।
- विशेष प्रशिक्षण या प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं।
- संस्क ति तथा परम्परा विशेष से गंभीर संबद्ध।
- हमारे जीवन से गहराई से जुड़ाव।
- प्रतिपुष्टि तात्कालिक तथा जानी—पहचानी।
- प्रचलित संदर्भ में रूप तथा विषयवस्तु में परिवर्तनीय लोचकता। उदाहरणार्थ, सामाजिक उद्देश्य हेतु रूप तथा शैली में बदलाव किए बिना गीत लिखना संभव।
- मूल्य या कीमत ज्यादा नहीं।
- याद रखने में आसान तथा जनता का तुरंत ध्यान आक ष्ट करने में सक्षम।
- देश के हर क्षेत्र में जनता से सर्वाधिक जुड़ाव।
- मूलतः बौद्धिकता की अपेक्षा भावनात्मक प्रभाव अधिक।

टिप्पणी

- जनता की संचार आवश्यकताओं के अनुरूप विविध रूप तथा विषय संपन्नता।
- स्थानीय तथा सजीव, दर्शक से सीधा तालमेल स्थापित करने में सक्षम।
- अपने दर्शकों को सुगमता से उपलब्ध।
- नये विषय ग्रहण करने की लोचकता।
- विशेषीक त इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की तुलना में सस्ता माध्यम तथा हर उम्र के दर्शकों द्वारा स्वीक त पसंदीदा।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लाभः—

- ज्यादा पहुँच तथा विभिन्नतायुक्त दर्शक वर्ग।
- तत्काल संदेश संचार की क्षमता।
- एक ही समय में विशाल जनसमूह तक संदेश प्रेषण में सक्षम।
- एक ही माध्यम में श्रव्य, द श्य तथा विषयवस्तु की विविधता का उपयोग संभव।
- भविष्य में उपयोग हेतु विषयवस्तु के ध्वन्यांकन तथा संग्रहण की सक्षमता।
- निकट भविष्य में इस माध्यम के अंतः क्रियामूलक होने की संभावना।
- सजीव प्रसारणों की शुरुआत के साथ संचार में अब कोई बाधा नहीं।

परम्परागत माध्यमों की हानियाँः-

- प्रदर्शन का स्थान सीमित।
- सीमित पहुँच।
- प्रदर्शनों के संग्रहण का सीमित अवसर।
- केवल सीमित दर्शक वर्ग को प्रभावित करने की संभावना।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की हानियाँः-

- सीमित अन्तरंगता।
- प्रतिपुष्टि यांत्रिकी या व्यवस्था धीमी।
- खर्चीला माध्यम।
- कार्यक्रम निर्माण हेतु विशेष प्रशिक्षण आवश्यक।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित पहुँच।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 27.1

1 निम्नलिखित में से सत्य तथा असत्य कथन छाँटें:–

i) परम्परागत माध्यम प्रक ति में अधिकांशतः इलेक्ट्रॉनिक होता है।

ii) जन माध्यम भविष्य के उपयोग हेतु ध्वन्यांकन तथा संग्रहण की सुविधा प्रदान करता है।

iii) परम्परागत माध्यम इसके उपयोग हेतु प्राथमिक अवसंरचना की माँग करता है।

iv) जन माध्यम एक ही समय में बहुत बड़े जनसमुदाय से संचार में सक्षम।

v) परम्परागत माध्यम स्थानीय तथा सजीव होते हैं एवं दर्शक से प्रत्यक्ष समझ विकसित करने में मददगार होते हैं।

27.2 परम्परागत माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया: प्रक ति

भारत में परम्परागत माध्यमों की खोज वर्षों पूर्व विकास तथा शैक्षणिक संचार के साधन के रूप में हुई। वांछित दिशा में जनता को उत्प्रेरित करने में यह अभी भी सक्षम है। यह मनोदशा में परिवर्तन हेतु सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम है। क्योंकि यह अनौपचारिक तथा अलिखित प्रक ति का होता है। इस तरह यह ग्रामीण दर्शकों को सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए परम्परागत माध्यमों का उपयोग आपके आस–पड़ोस में स्वच्छता की आवश्यकता के विषय में जनजागरूकता कायम कर सकता है।

परम्परागत माध्यम ग्रामीण, जनजातीय क्षेत्रों तथा निरक्षर लोगों में सर्वाधिक प्रभावी हो सकते हैं, क्योंकि ऐसे लोगों को हो सकता है आधुनिक संचार की भाषा समझ में न आए। वस्तुतः परम्परागत माध्यम और कुछ नहीं बल्कि संचार का उपकरण है जिसमें लोगों की जहाँ से वे सम्बन्धित होते हैं उसकी सामाजिक, सांस्क तिक, धार्मिक, नैतिक तथा भावनात्मक आवश्यकताओं को अभिव्यक्त करने की विशेष खासियत होती है।

परम्परागत माध्यम शैक्षणिक उद्देश्यों तथा समाज में परिवर्तन के साधन के रूप में भी उपयोग किए जाते हैं। यह शैक्षणिक संदेशों को मनोरंजन, रंग, पोशाक, संगीत तथा न त्य के माध्यम से प्रेषित करते हैं। चूँकि यह तत्व दर्शक की संस्क ति का एकीक त भाग निर्मित करते हैं, दर्शक परम्परागत माध्यमों द्वारा प्राप्त अनुभवों से पहचान में सक्षम होता है। अब हम ग्रामीण क्षेत्रों में परम्परागत माध्यम का एक उदाहरण लेंगे।

परम्परागत माध्यम क षि को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आइए देखें कि यह कैसे होता है।

परम्परागत माध्यम सूचना, शिक्षा तथा प्रशिक्षण प्रदान कर किसानों की सक्षम, उपजाऊ तथा संतुलित रूप से अपने भूमि तथा क षि संसाधनों के उपयोग में मदद करते हैं। उत्पादन दक्षता तथा आय बढ़ाने में किसानों की मदद करने योग्य कुछ चुनिन्दा परम्परागत माध्यमरूपों की पहचान भी की गयी है। यह उम्मीद की जाती है कि इससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा तथा ग्रामीण शैक्षणिक तथा सामाजिक जीवन ऊपर उठेगा।

इसके लिए मीडिया को किसानों से मिलकर काम करना चाहिए। परम्परागत माध्यमों के अनेक रूप हैं जिनकी मदद से किसानों को प्रशिक्षित किया जा सकता है। अलग–अलग रूप अलग–अलग परिस्थितियों में प्रभावी होते हैं।

आइए अब विभिन्न रूपों का अध्ययन करें।

प्रदर्शनः प्रदर्शन ज्ञान के स्थानान्तरण तथा नये विचार एवं प्रौद्योगिकी आजमाने के लिए किसानों को उत्प्रेरित करने का उपयोगी साधन हैं। साप्ताहिक हाट–बाजार जहाँ किसान एकत्रित होते हैं परम्परागत माध्यमों जैसे कथा कहना एवं नाटक का उपयोग किया जा सकता है।

मेलाः एक अल्प समयावधि में बहुत सारे लोगों में परिवर्द्धित प्रौद्योगिकी के विषय में जागरूकता लाने में मेले मदद करते हैं। यह किसानों के समक्ष नयी प्रौद्योगिकी, तकनीकों को जो अन्य किसानों तथा सरकार एवं गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा प्रयुक्त हैं स्पष्ट करने में मददगार होते हैं। यह सम्बन्धित साहित्य तथा परिचर्चा को अनौपचारिक माहौल में उपलब्धता का अवसर प्रदान करता है।

विशेषज्ञों से सीधा संवादः शोध संस्थानों तथा वैसे कृषि, खेती के नये तौर–तरीके जो इस क्षेत्र में सफल रहे हैं, उनका अवलोकन किसानों को अपने क्षेत्र के विशेषज्ञों से सीधे संवाद का अवसर प्रदान करते हैं। उनकी समस्याएँ वहीं पर तत्काल सुलझाई जा सकती हैं। तथा अन्य किसानों की सफलता उत्प्रेरक का काम करती है।

कठपुतली : आपने पूर्व के पाठ में कठपुतली के विभिन्न रूपों के बारे में जानकारी प्राप्त की है। कठपुतली लोकप्रिय परम्परागत माध्यम रूप है जो शैक्षणिक माध्यम के रूप में प्रयुक्त होता है। उसका यह रूप शिक्षा तथा मनोरंजन का मिश्रित रूप है।

उपरोक्त वर्णित परम्परागत माध्यमरूप आमने–सामने की स्थितियों में संदेशवाहक के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं। इससे ग्रामीण संचार अर्थपूर्ण सहमतिमूलक हो सकता है।

अब हम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की प्रक ति पर चर्चा करेंगे।

टिप्पणी

रेडियो तथा टेलीविजन जैसे इलेक्ट्रॉनिक माध्यम द ष्टि तथा श्रव्य इन्द्रियों के प्रभावी उपयोग के माध्यम हैं।

रेडियो कल्पनाशीलता को सक्रिय करने वाला छोटा तथा सस्ता माध्यम है वहीं टेलीविजन में ध्वनि तथा चित्र की क्षमताएँ हैं। आपने यह भी पढ़ा होगा कि द श्य–श्रव्य प्रक ति टेलीविजन को वह जादुई माध्यम बनाती हे जो हमें घर बैठे पूरी दुनिया देखने का अवसर प्रदान करता है।

आपने पूर्व के पाठों में यह भी पढ़ा होगा कि तात्कालिकता तथा समयबद्धता इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की महत्वपूर्ण विशेषता है। इससे इनके संदेश प्राप्ति में विलम्ब नहीं होता।

अपनी विशाल प्रसारण क्षमताओं के चलते सूचना हस्तांतरण, शिक्षा, संस्क ति, स्वास्थ्य, राजनीति आदि में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की केन्द्रीक त भूमिका है।

माध्यम तक पहुँच, उच्चारित शब्दों की बुनियादी समझ तथा संक्षिप्त प्रशिक्षण इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की विविध सेवाओं के उपयोग हेतु पर्याप्त हैं।

उच्चीक त प्रौद्योगिकी की मदद से विस्तारित भौगोलिक परिक्षेत्र को कवर करना इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से अत्यन्त सरल तथा सस्ता है।

जो भी हो, टेलीविजन जैसे इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ने लोगों की जीवन शैली, आदतों तथा मूल्यों में बदलाव किया है। अनेक शोधों में यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि टेलीविजन देखने से लोगों का, विशेषरूप से बच्चों का व्यवहार बदल सकता है।

परम्परागत माध्यमों के बारे में व्याप्त भ्रम तथा कल्पनाएँः- परम्परागत माध्यमों के विषय में लोगों के मन में कुछ भ्रम तथा कल्पनाएँ प्रचलित हैं। इनमें से कुछ निम्न हैंः–

- वर्तमान संदर्भों में परम्परागत माध्यमों की कोई उपयोगिता नहीं है।
- ये जनसंचार के लिए उपयोगी नहीं है।

हालांकि परम्परागत माध्यम एक समय में छोटे से दर्शक वर्ग तक पहुँचते हैं फिर भी इनका प्रभाव गहराई तक होता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विपरीत परम्परागत माध्यम में श्रोताओं की सहभागिता होती है। कलारूप हमारे पूर्वजों की परम्परा तथा संस्क ति का संरक्षण तथा विसरण करते हैं। समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए परम्परागत माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जन माध्यमों के कुछ रूपों में यह देखा गया है कि विकास संदेशों के संदर्भ में उनका वांछित प्रभाव नहीं होता है। जबकि परम्परागत माध्यम परिवर्तन तथा विकास के लिए उत्प्रेरणा में ज्यादा प्रभावी पाए गये हैं।

पाठगत प्रश्न 27.2

1 परम्परागत माध्यमों के पाँच लाभ बताइए।

2 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पाँच हानियों को सूचीबद्ध करें।

27.3 परम्परागत माध्यमों तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में पारस्परिक सम्बन्ध

पारस्परिक सम्बन्धः– भारत अनेक संपन्न, प्रभावी, लोकप्रिय तथा शक्तिशाली परम्परागत माध्यमरूपों से भरा है जो सदियों में विकसित हुए हैं। भले ही इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विकास ने दुनिया को गाँव में बदल दिया हो लेकिन अनेक क्षेत्रों में परम्परागत माध्यम रूपों ने अपनी महत्ता बनाए रखी है।

हमारे समाज में परम्परागत माध्यम अभी भी प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं। परम्परागत माध्यम के तत्वों का इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग हुआ है तथा इस तरह के परम्परागत माध्यमों का विकास संचार में उपयोग हो रहा है। आप पहले मॉड्यूल में विकास संचार के बारे में जो पढ़ा है उसे याद कर सकते हैं।

चित्र 27.1 फिल्म स्क्रीन पर कठपुतली प्रदर्शन देखना

परम्परागत माध्यमों की मदद से क षि विकास, प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षण तथा पोषण, शिक्षा, महिला तथा बाल अधिकार संदेशों का प्रेषण हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत सारे लोग अपने दैनिक जीवन की कठिनाइयों से आराम के लिए परम्परागत माध्यम

टिप्पणी

के कलाकारों की प्रस्तुतियों का आनन्द उठाते हैं। इनमें से बहुत सारे लोगों की अभी भी मनोरंजन के आधुनिक माध्यमों तक पहुँच नहीं है।

वर्षों से उत्तरोत्तर यह माध्यम सजीव प्रदर्शन तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ संयोजन से विकास संदेशों के संचार के उपयोगी साधन के रूप में चिन्हित हुए हैं।

रेडियो तथा टेलीविजन जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने परम्परागत प्रदर्शनों के क्षेत्रीय कवरेज विस्तार का काम किया है। वहीं दूसरी ओर परम्परागत माध्यमों ने अपने रंग वैविध्य, पोशाक, न त्य तथा संगीत की विविधता से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की प्रस्तुतियों को संपन्न किया है।

ग्रामीण जनता को उत्प्रेरित करने के लिए बहुत सारे अध्येताओं ने सूचनाओं के त्वरित प्रेषण हेतु परम्परागत माध्यमों तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के संयोजन की हिमायत की है। ग्रामीण विकास के किसी भी कार्यक्रम का परम्परागत माध्यम संयुक्त हिस्सा होना चाहिए। जहाँ तक संभव हो इनका इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से संयोजन होना चाहिए जिनसे पूर्व से ही स्थानीय लोग परिचित हैं तथा जिनका केवल मनोरंजन के साधन के रूप में ही उपयोग हुआ है।

विकासात्मक गतिविधियों में लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु मनोरंजन के माध्यम से लोगों का ध्यान आक ष्ट करने के लिए तथा ग्रामीण जनता को समझने के लिए परम्परागत माध्यमों का उपयोग आवश्यक शर्त की तरह है।

संचार कार्यक्रमों में परम्परागत माध्यमों की उपयोगिता केवल राजनीतिक तथा सामाजिक–आर्थिक विकास ही नहीं बल्कि सांस्क तिक विकास की द ष्टि से भी देखना चाहिए। परम्परागत माध्यमों को अपनी सामाजिक विश्वसनीयता बनाये रखने की आवश्यकता है। सभी परम्परागत माध्यम विकास संचार हेतु उपयोग नहीं हो सकते हैं। प्रासंगिक संदेशों के संचार हेतु उपयुक्त माध्यम के चयन में अपेक्षित सावधानी रखनी चाहिए। परम्परागत माध्यम कार्यक्रमों को समाज की आवश्यकताओं से अनुकूल होना चाहिए तथा स्थानीय समुदाय की परम्पराओं और विश्वास के अनुरूप होना चाहिए। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र के लोकनाट्य तमाशा का केरल में सामाजिक संदेशों के प्रेषण में कोई महत्व नहीं है।

प्रयास इन कलारूपों की मौलिकता को बचाने के होने चाहिए उन्हे नष्ट–भ्रष्ट करने के नहीं। इसी प्रकार, लोक कलाकारों तथा निर्माताओं के मध्य सामंजस्य परम्परागत माध्यमों तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के संयुक्त उपयोग से विकासात्मक उद्देश्यों हेतु अनिवार्य है।

जो भी हो, अधिक आकर्षक तथा अधिक शक्तिशाली इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रभाव में परम्परागत कलारूप प्रभावित तथा यहाँ तक कि रूपान्तरित भी हो रहे हैं। इसी समय में यह देखना भी अपेक्षित है कि किस कौशल से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पारम्परिक तथा

टिप्पणी

लोकरूपों का रेडियो तथा टेलीविजन पर विशेष रूप से किसानों हेतु कार्यक्रमों में समसामयिक संदेशों के संचार हेतु शोषण कर रहा है।

यह संयुक्त द ष्टिकोण ही है जो दोनों प्रौद्योगिकी आधारित मीडिया तथा लोकमाध्यम दोनो की क्षमताओं में बढ़ोतरी करेगा। एक व्यावहारिक द ष्टिकोण के लिए आधुनिक तथा परम्परागत माध्यमों का जुड़ाव आवश्यक है। लेकिन साथ ही परम्परागत माध्यम की मौलिकता को बचाने का भी ध्यान रखना आवश्यक है। यह संभव नहीं है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया परम्परागत माध्यम को अप्रासंगिक कर दे जिस तरह टेलीविजन देखने से समाचारपत्र पाठन पर प्रभाव नहीं पड़ा है।

27.4 आपने क्या सीखाः-

→ परम्परागत माध्यमों के लाभः

- विशेष प्रशिक्षण आवश्यक नहीं।
- प्रतिपुष्टि तात्कालिक तथा जानी–पहचानी।
- सस्ता।
- स्थानीय तथा सजीव माध्यम।
- नये विषय को स्वीकार करने लायक लोचनीयता।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लाभः

- प्रक ति से प्रायः इलेक्ट्रॉनिक।
- तत्काल संचार सक्षमता।
- विस्तारित भौगोलिक क्षेत्र कवर करना संभव।

परम्परागत माध्यमों की सीमितताः

- प्रदर्शन स्थान तक सीमितता।
- सीमित दर्शक वर्ग तक पहुँच।
- संग्रहण की सीमित संभावना।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सीमितताः–

- कम अन्तरंगता।

टिप्पणी

- प्रतिपुष्टि यांत्रिकी या व्यवस्था धीमी।

→ परम्परागत तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की प्रक तिः–

परम्परागत माध्यम

- ग्रामीण, जनजातीय क्षेत्रों तथा निरक्षरों हेतु प्रभावी माध्यम।
- शैक्षणिक संदेशों का मनोरंजन, रंग, पोशाक, न त्य तथा संगीत के माध्यम से शैक्षणिक संदेशों का प्रेषण।
- दर्शक संचार के इस माध्यम को आसानी से स्वीकार कर सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

- तात्कालिक तथा समयबद्ध माध्यम।
- रेडियो सस्ता तथा वहनीय माध्यम है।
- टेलीविजन की द श्य–श्रव्य प्रक ति इसे दर्शकों हेतु एक जादुई माध्यम बनाती है।
- रेडियो तथा टेलीविजन द्वारा निरन्तर कवरेज संभव।
- टेलीविजन का दर्शकों पर सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा परम्परागत माध्यमों की संयुक्त भूमिका

- परम्परागत प्रदर्शनों की मास मीडिया चैनलों द्वारा कवरेज।
- फिल्मगीत तथा न त्यों द्वारा परम्परागत माध्यम रूपों में परिवर्तन।

27.5 पाठान्त प्रश्न

1 परम्परागत माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रक ति की चर्चा करें।

2 परम्परागत माध्यम के लाभ–हानि को सूचीबद्ध करें।

3 एक हफ्ते तक टेलीविजन कार्यक्रम देखिए। इस अवधि में आपको टेलीविजन पर जो परम्परागत माध्यम रूप दिखाई दें उन्हें सूचीबद्ध करें।

27.6 पाठगत प्रश्नों के उत्तर:

27.1 1 i) गलत

ii) सही

iii) गलत

iv) सही

v) सही

27.2 1 i) मानवीय संचार में सर्वाधिक उपयोगी।

ii) विशेष प्रशिक्षण या तकनीकी जरूरी नहीं।

iii) व्यक्ति विशेष की संस्क ति तथा परम्परा से सर्वाधिक संबद्ध।

iv) हमारे जीवन का अभिन्न अंग।

v) प्रतिपुष्टि तात्कालिक तथा जानी–पहचानी।

vi) कोई अन्य।

2 i) कम अन्तरंग।

ii) प्रतिपुष्टि यांत्रिकी या व्यवस्था धीमी।

iii) खर्चीला माध्यम।

iv) कार्यक्रम निर्माण हेतु विशेष प्रशिक्षण आवश्यक।

v) ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित पहुँच।

vi) कोई अन्य।